5

स्कूल की शिक्षण परिधि – चिंतन और संस्मरण

मीनाक्षी खार*

स्कूली शिक्षा के लिए बनाई नीतियों, दस्तावेज़ों और ज़मीनी स्तर पर देखी जाने वाली सच्चाइयों में विरोधाभास है। शिक्षा नीतियाँ ऊँची उड़ान भरने का दम भरती हैं और शायद ज़मीनी हकीकतों को नज़रअंदाज़ कर देती हैं।

आज स्कूल फंड्स, सुविधाओं, बच्चों और अध्यापकों से सुसज्जित नज़र आते हैं। परंतु स्कूलों का मानवीकरण करने और आधुनिक सोच से जोड़ने की ज़रूरत अहम है। स्कूल में तीन माह काम करने के अवसर से भाषा शिक्षण की स्थिति को समझने और बदलाव की संभावनाओं पर चिंतन करने और इसके साथ स्कूल की रोज़ाना की कार्यवाही, पुस्तकालय, दफ़्तर इत्यादि में ताक-झाँक करने का मौका भी मिला।

यह हरियाणा के एक गाँव में स्थित क्लस्टर लेवल का सीनियर सैकेंडरी स्कूल है। इस लेख में इसी स्कूल की प्राथमिक कक्षाओं के कुछ अनुभव बाँट रही हूँ।

हरियाणा के गाँव में स्थित प्राथमिक स्कूल देश की शिक्षा प्रणाली और शिक्षा के स्तर का जीवंत उदाहरण है। सरकारी आँकड़ों में यह स्कूल सभी उपलब्ध सुविधाओं के साथ शामिल है। प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों एवं अध्यापकों की उपस्थिति सामान्य है। स्कूल बड़े शहर के करीब स्थित होने के कारण अन्य राज्यों से रोज़गार के तलाश में आए लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। बच्चों का दाखिला सरकारी स्कूल में आसानी से हो जाता है। परंतु बच्चों का स्कूल, अध्यापकों और स्कूली गतिविधियों से जुड़ाव असंभव प्रतीत होता है। स्कूल के अनुभवों से जुड़े बिंदुओं पर चर्चा इस प्रकार है:

- स्कूल में दाखिला और स्कूली पढ़ाई के साथ जुड़ाव दो अलग-अलग मुद्दे हैं।
- प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों का प्रवेश स्कूल के लिए एक उत्सव के समान है। स्कूल के अध्यापक गाँव में शिक्षा की महत्ता का प्रचार करते हैं। अध्यापक अभिभावकों को उनके बच्चों को स्कूल भेजने के लिए तैयार करते हैं। अध्यापकों को हरियाणा के इस स्कूल (जिसकी बात हम कर रहे हैं) में बच्चों को दाखिल करने के लिए सहमत करने में ज़्यादा कठिनाई नहीं आती। इसका कारण यह है कि माता-पिता दोनों सवेरे ही काम पर चले जाते हैं। ऐसे में

* *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

स्कूल बच्चों को छोड़ने की एक सुरक्षित जगह समझा जाता है। दूसरे मिड-डे-मील स्कीम के तहत बच्चों के खाने की व्यवस्था हो जाती है। बच्चों का स्कूल में दाखिला ऐसे ही व्यक्तिगत कारणों से होता है। ऐसे हालात में अभिभावक पढ़ाई के स्कूली माहौल से जुड़ नहीं पाते। बच्चों की शिक्षा में स्कूल के योगदान के साथ अभिभावकों की भागीदारी नहीं बन पाती।

- दूसरी सच्चाई है बच्चों का लंबे समय तक स्कूल से गैर-हाज़िर रहना। इसकी वजह बच्चों का आजीविका अर्जन करने में माता-पिता का साथ देना है।
- खेतों में फ़सल की बुआई और कटाई के समय बच्चे अपने परिवार के साथ गाँवों में काम करते हैं। स्कूल से लंबी अनुपस्थिति अध्यापकों के लिए परेशानी का कारण बन जाती है। उनका कहना है कि ऐसी स्थिति में वे दूसरे उपस्थित बच्चों की तुलना में पिछड़ जाते हैं।
- शिक्षण पद्धति और शिक्षकों का रवैया स्कूल में समय से पहुँचने के बाद बच्चे कतारों में बैठ जाते हैं। शिक्षक का अंग्रेज़ी में अभिनंदन करने के बाद वे शिक्षक के आदेशों का पालन करते हैं। दीवार पर लगे अंग्रेज़ी व हिंदी के वर्णमाला के चार्ट न तो उनका ध्यान आकर्षित करते हैं और न ही उन्हें कुछ सीखने और पढ़ने के आनंद के मौके देते हैं। रोज़ का यह कार्यक्रम इस उम्मीद पर टिका है कि बच्चे अंग्रेज़ी व हिंदी के वर्णों और मात्राओं की पहचान कर पाने के बाद ही पढ़ना-लिखना सीखेंगे। शिक्षण की यह पद्धति कक्षा का माहौल उबाऊ बना देती है। अनुशासन के नाम पर उन्हें चुपचाप बैठना होता है। ऐसे में यह देखा गया कि बच्चे जो कुछ नया करने की उम्मीद से स्कूल आते हैं शिक्षक द्वारा खींची गई लक्ष्मण रेखा में कैद हुआ महसूस करते हैं। बच्चों में शारीरिक अस्वस्थता के साथ मानसिक उदासीनता पनपने लगती है।

शिक्षकों के साथ हुए संवाद से कुछ बिंदु उभर कर आए –

- शिक्षकों को प्रारंभिक साक्षरता से जुड़े प्रगतिशील विचारों से अवगत होना होगा।
- कक्षा में प्रारंभिक साक्षरता की शुरूआत बच्चों के अपने अनुभवों को आगे बढ़ाने से करनी होगी। जैसे कि उनके जीवन से जुड़ी घटनाएँ भाषा सीखने की गतिविधियों का हिस्सा बन सकती हैं।
- शिक्षक बाल-साहित्य की मदद से बच्चों में भाषा कौशलों का विकास कर सकते हैं।
- शिक्षक द्वारा सुनाई गई कहानियाँ और कविताएँ बच्चों को भाषा की समृद्धता से परिचित कराती हैं तथा पढ़ने-लिखने की बात करने के लिए सदैव उत्साहित करती हैं।
- शिक्षकों का पाठ्यपुस्तक से गहराई से जुड़ाव शायद प्रारंभिक शिक्षा के दायरे को सीमित कर देता है। वास्तव में पाठ्यपुस्तक शिक्षा की दिशा और उद्देश्य का प्रस्तुतीकरण है। कहानियाँ, कविताओं का पाठ्यपुस्तक के लिए चुनाव पाठ्यक्रम में निर्धारित उद्देश्य का

उदाहरण होते हैं। शिक्षक पाठ्यपुस्तक के पाठों का विस्तार अन्य उदाहरणों से कर सकते हैं जिसके लिए उनकी पहुँच बाल-साहित्य तक होनी आवश्यक है।

- शिक्षण एक अर्थपूर्ण गतिविधि है (जो कि बच्चों के अनुभव से जुड़ी है) का उपयोग भाषा के चारों कौशलों – सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना के लिए कर सकते हैं।
- शिक्षकों का अनुभव यह भी है कि पाठ्यपुस्तक की रचनाएँ (विशेषकर अंग्रेज़ी की पाठ्यपुस्तकों में) बच्चे के परिवेश से परे होती हैं। ऐसे स्थिति में शिक्षक पाठ को छोड़ सकते हैं, बदल सकते हैं या फिर उससे मिलती-जुलती कहानी, हिंदी का पाठ, कविता इत्यादि को अंग्रेज़ी के निर्धारित पाठ को पढ़ने से पहले कक्षा में चर्चा का विषय बना सकते हैं।
- बच्चों के साथ अंग्रेजी में बात करने से न हिचकिचाएँ और उनकी गलतियों को उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाए बिना ध्यानपूर्वक सुधारें। बच्चों की गलतियाँ उनकी भाषा सीखने की प्रक्रिया का हिस्सा हैं। बच्चों की गलतियाँ उनके भाषा सीखने के साहसिक कदम हैं। शिक्षक के लिए इन गलतियों में बच्चों की प्रगति आंकने की संभावनाएँ समाहित हैं।

स्कूल और गैर-सरकारी संस्थाएँ

शिक्षा संबंधित गैर-सरकारी संस्थाएँ स्कूल से जुड़ी हुई हैं। इन संस्थाओं के प्रतिनिधि स्कूल में बच्चों को पढ़ाने आते हैं। वे बच्चों को किताबें, कॉपियाँ भी उपलब्ध कराते हैं। उनके इस प्रकार के प्रयत्न सराहनीय हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्या उनके द्वारा प्रचलित शिक्षण प्रणाली की नयी सोच से बनाई गई पुस्तकों और शिक्षण पद्धतियों में समावेश संभव है? स्कूल के अध्यापकों को इस बात की समझ और परखने के तरीकों की जानकारी का होना भी आवश्यक है, अन्यथा उनके प्रयास विफल होते नज़र आएंगे।

गैर-सरकारी संस्थाओं से जुड़े लोगों की प्राथमिक कक्षाओं में उपस्थिति ठोस बदलाव लाने में असफल प्रतीत होती है। वे स्कूल के स्थायी शिक्षकों की मदद केवल बच्चों को अनुशासित रखने में ही कर पाते हैं। उनकी भाषा सीखने-सिखाने की पद्धतियाँ पाठ्यक्रम-2005 के अनुरूप नहीं हैं। ऐसे में नई पाठ्यपुस्तकों को पढ़ाने, गतिविधियाँ कराने और आकलन करने के प्रस्तावित नये तरीकों की जानकारी उनके पास नहीं है। स्कूल के लिए ज़रूरी है कि प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों या गैर-सरकारी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को ही स्कूल में पढ़ाने के मौके दें।

शिक्षण में टी.वी. का योगदान

प्राथमिक स्कूल के हैड-मास्टर के कमरे में टी.वी. उपलब्ध है। बच्चों को निर्धारित समय पर हरियाणा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्मित कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। स्कूल की दिनचर्या का यह केवल एक हिस्सा है। अध्यापकों की उपस्थिति उन्हें केवल चुपचाप बैठा कर प्रोग्राम देखने के लिए ही होती है। प्रोग्राम से बच्चों को जोड़ने के लिए न तो कोई भूमिका रहती है और न प्रोग्राम खत्म होने पर किसी किस्म का संवाद।

ध्यान देने की बात यह है कि प्रारंभिक साक्षरता के लिए इन अवसरों का सही उपयोग होता नहीं है। शिक्षण केवल पाठ्यपुस्तक और परीक्षा पर केंद्रित है। बच्चों की स्कूल से टूटती उम्मीदों को पाठ्यपुस्तक बदलने से नहीं रोका जा सकता। ज़रूरत है शिक्षक की भाषा शिक्षण, प्रारंभिक साक्षरता की समझ बनाने की, बच्चों के प्रति अपना रवैया बदलने की।

विशेषकर अंग्रेज़ी के पाठ्यक्रम को लेकर शिक्षकों में कुछ ज़्यादा ही उदासीनता नज़र आई। ऐसा उनके प्राथमिक स्तर पर आधुनिक भाषा शिक्षण की जानकारी न होने के कारण है। ऐसा भी प्रतीत हुआ कि प्रयोगात्मक ढंग से कुछ नया करने का उत्साह कुछ अध्यापकों में कम नज़र आता है।

यह उम्मीद करते हैं कि सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ इस दिशा में अध्यापकों की सकारात्मक रूप से निम्नलिखित मुद्दों पर मदद करेंगी –

1. शिक्षकों को प्रारंभिक शिक्षण की प्रगतिशील पद्धतियों से अवगत कराना।
2. प्रशिक्षण की प्रक्रिया को सशक्त करना।
3. प्रगतिशील विचार वाले अध्यापकों का रिसोर्स ग्रुप तैयार करना।
4. कलाकारों, कहानी सुनाने में प्रवीण लोगों को स्कूल से जोड़ना।
5. अध्यापकों को बाल-साहित्य से परिचित कराना।
6. बाल-साहित्य को भाषा शिक्षण से जोड़ने का महत्त्व बताना।
7. स्कूल में पुस्तक मेला, रीडिंग क्लब खोलना और समुदाय को साक्षर करने का प्रयास करना।

❑❑❑